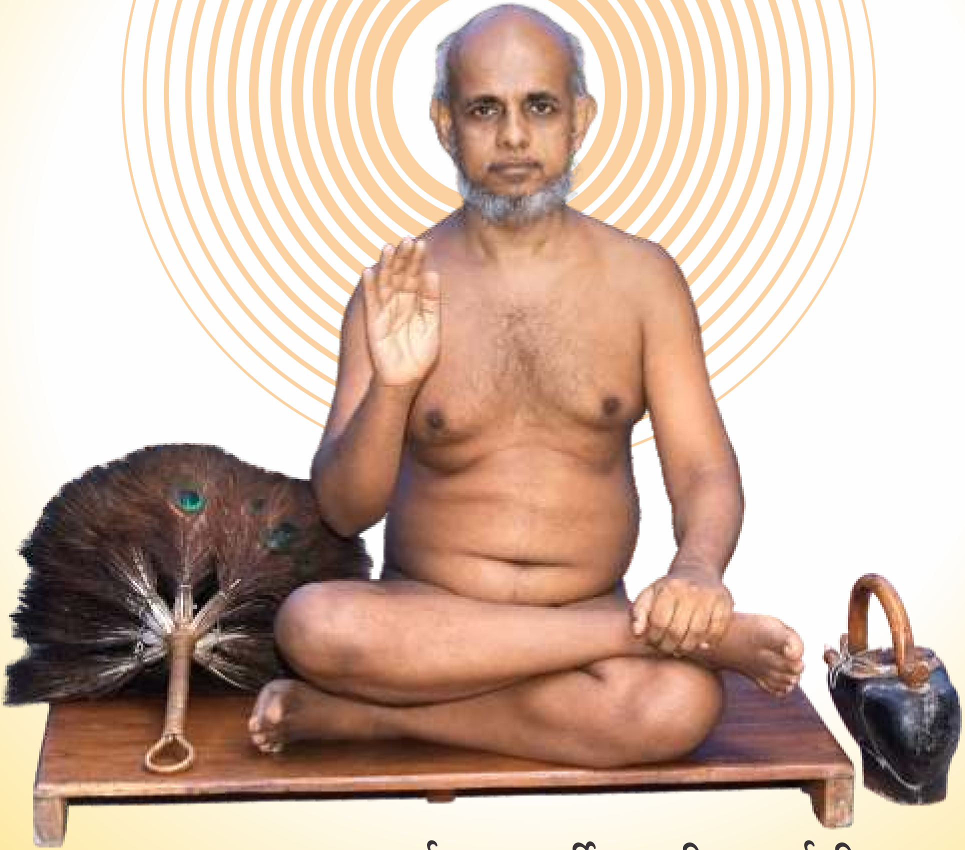

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी–महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणाः–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

विशद श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ तीर्थंकर पूजन विधान

कृतिकार :

परम पूज्य आचार्यश्री विशदसागर जी महाराज

प्राप्तिस्थान :

विशद साहित्य केन्द्र श्री दिगम्बर जैन मन्दिर,

कुआँ वाला, जैनपुरी रेवाड़ी (हरियाणा)

(परम्परानायक)

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

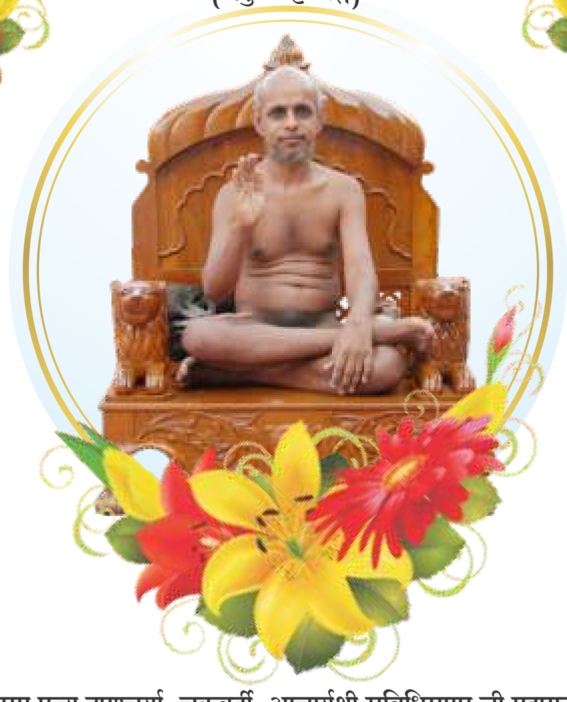

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्राय: होता है। फलत: उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तुत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

Ñfr % fo'knh'kkfUrdqUFkqvjgukFke.Myfoèkku

Ñfrdkj % i-iw- lkfgR; jRukdj] {kekewfrZ vkpk;Z Jh 108 fo'knlkxjth egkjkt

laLdj.k % izFke&2014* izfr;k¡ %1000

ladyu % eqfu Jh 108 fo'kkylkxjth egkjkt

lg;ksxh % {kqYyd Jh 105 folkselkxjth egkjkt

laiknu % cz- T;ksfrnhnh¼9829076085½ cz- vkLFkkrhnh] cz- liukrhnh

la;kstu % cz- lksuwrhnh] cz- fdj.krhnh] cz- vkjrhnhnh] cz- mekrhnh

lEidZ lw=k % 9829127533] 9953877155

izkfIrLFky % 1- tSu ljkoj lfefr] fuezyda pkjxksèkk] 2142] fuezy fudqat] jsfM;ksekdsZV efugkjksa dk jkLrk] t;iqj Qksu%0141&2319907 ¼?kj½ eks- %9414812008

2- Jh jkts'k dqekj tSu BsdsnkJ ,&107] cqèk fogkj] vyoj] eks- %9414016566

3- fo'kn lkfgR; dsUnz Jh fnxEcj tSu eafnj dqvk¡ okyk tSuiqjh jsokM+h ¼gfj;k.kk½] 9812502062] 09416888879

4- fo'kn lkfgR; dsUnz] gjh'k tSu t; vfjgUr VªsMlZ] 6561 usg: xyh fu;j ykycÙkh pkSd] xka/khuxj] fnYyh eks- 09818115971] 09136248971

eqY; % 25@&#- ek=k

µ%vFkZ lkStU; %µ

euh"k tSu

jkefjNiky y{ehpUn tSu

आजाद चौक, नारनौल, हरियाणा

फोन : 09355348351, 01282-251004

eqnzd% ikjlizdk'ku] fnYyh Qksu ua- %09811374961] 09818394651

ए-एळश्र : ज्ञिक्षरळपरिरिऽसारळश्र.लो, रिरिरिज्ञरिहरपऽूरहे.लो

"श्रेष्ठ पूजन, भक्ति आराधना, ध्यान साधना से ही कटेगी कर्मों की विशाल श्रृँखला"

जब चिन्त्यों तब सहस्र फल, लक्खा फल गमणेय।
कोड़ा-कोड़ी अनंत फल, जब जिनवर दिट्ठेय॥

अर्थात्: जब हमारे मन में भगवान् के दर्शन करने का विचार आता है, तब हजार गुणा फल मिलता है। जब दर्शन के लिए भक्तिभाव से द्रव्य-सामग्री लेकर चल देते हैं तब लाख गुण फल मिलता है और जब साक्षात् जिनबिम्ब के दर्शन पूर्ण श्रद्धा भक्तिभाव, क्रिया विधि से करते हैं तब अनन्त कोड़ा-कोड़ी फल मिलता है। अरिहन्त प्रभु को नमस्कार करना तत्कालीन बन्ध की अपेक्षा असंख्यात गुणी निर्जरा का कारण होता है। शिवकोटि आचार्य महाराज ने पूजा का फल बताते हुए लिखा है कि मात्र जिन भक्ति ही दुर्गति का नाश करने में समर्थ है। इससे विपुल पुण्य की प्राप्ति होती है और मोक्षपद प्राप्त होने के पूर्व तक इससे इन्द्रपद, चक्रवर्तीपद, अहमेन्द्रपद और तीर्थंकर पद के सुखों की प्राप्ति होती है।

जिस तरह अग्नि बहुत समय से इकट्ठे किये हुए समस्त काष्ठ समूह को क्षणमात्र में जला देती है उसी तरह जिन भगवान की पूजन करने से विधान करने से जीवों के जन्म-जन्म के संचित पापकर्म क्षणमात्र में नाश को प्राप्त हो जाते हैं।

प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री **108 विशदसागर जी महाराज** द्वारा रचित विशद विधान संग्रह के प्रथम भाग में श्री आदिनाथ से वासुपूज्य तक व "विशद विधान संग्रह (भाग-2)" में श्री विमलनाथ से महावीर तक 24 विधानों का संकलन किया गया है। इसके साथ ही प्रस्तुत कृति **'श्री शांति कुन्थु अरहनाथ मण्डल विधान'** त्रय तीर्थंकर विधान की भी रचना की है जो सर्वोपयोगी है।

पंचकल्याणक की तिथियों, पर्व के दिनों में या विशेष अवसरों में इस पुस्तक से यथोयोग्य पूजन विधान कर जीवन को सौभाग्यशाली बनाएँ। पुन: आचार्य गुरु श्री विशदसागर जी के श्री चरणों में नवकोटि से नमोस्तु एवं भावना भाते हैं कि आगे भी आपकी लेखनी और भी विशाल रूप लेते हुए जिनवाणी की सेवा में लगी रहे।

—मुनि विशालसागर
(संघस्थ आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज)

मूलनायक सहित महासमुच्चय पूजा

स्थापना

अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु जिन धर्म प्रधान।
जैनागम जिन चैत्य जिनालय, रत्नत्रय दश धर्म महान॥
सोलह कारण णमोकार शुभ, अकृत्रिम जिन चैत्यालय।
सहस्त्रनाम नन्दीश्वर मेरू, अतिशय क्षेत्र हैं मंगलमय॥
ऊर्जयन्त कैलाश शिखर जी, चम्पा, पावापुर, निर्वाण।
विहरमान, तीर्थंकर चौबिस, गणधर मुनि का है आह्वान॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित पंचकल्याणक पदालंकृत सर्व जिनेश्वर श्री अरहंत-सिद्ध-आचार्य- उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म जिनागम-जिनचैत्य-जिन चैत्यालय-रत्नत्रय धर्म-दशधर्म-सोलहकारण-त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय सहस्त्रनाम-पंचमेरू-नन्दीश्वर सम्बन्धी चैत्य चैत्यालय- कैलाश गिरि-सम्मेद शिखर-गिरनार-चम्पापुरी- पावापुर आदि निर्वाण क्षेत्र अतिशय क्षेत्र, चतुर्विंशति तीर्थंकर-विद्यमान बीस तीर्थंकर गणधरादि मुनिवराः अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

तीनों रोग महादुखदायी, उनसे हम घबड़ाए हैं।
निर्मलता पाने हे जिनवर!, प्रासुक जल यह लाए हैं॥
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्त्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष॥
देव शास्त्र गुरु धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित पंचकल्याणक पदालंकृत सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सोलहकारण-रत्नत्रय-दशधर्म, पंच मेरू-नन्दीश्वर त्रिलोक सम्बन्धी समस्त कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, सिद्ध क्षेत्र अतिशय क्षेत्र त्रिकाल चौबीसी, विद्यमान बीस तीर्थंकर तीन कम नौ करोड़ मुनिवराः जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध की ज्वाला में हे स्वामी, सदा झुलसते आए हैं।
शीतलता पाने तुम चरणों, चन्दन घिसकर लाए हैं॥
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्त्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष॥
देव शास्त्र गुरू धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद का ज्ञान जगाने, तव चरणों मे आये हैं।
अक्षय पदवी पाने हे जिन!, अक्षत चरणों लाए हैं॥
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्त्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष॥
देव शास्त्र गुरू धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः अक्षयपदप्राप्ताये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम रोग से पीड़ित होकर, निज को ना लख पाए हैं।
शीलेश्वर बनने को चरणों, पुष्प संजोकर लाए हैं॥
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्त्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष॥
देव शास्त्र गुरु धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मग्न हुए प्रभु आतम रस में, क्षुधा रोग बिनसाए हैं।
निजगुण पाने को हे जिन, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्त्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष।।
देव शास्त्र गुरू धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो: क्षुधरोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भटक रहे अज्ञान तिमिर में, चित् प्रकाश ना पाए हैं।
दीप जलाकर के यह घृत का, मोह नशाने आए हैं।
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्त्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष।।
देव शास्त्र गुरु धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो: मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान अग्नि में कर्म खपा, निज गंध जगाने आये हैं।
सुरभित धूप सुगन्धित अनुपम, यहाँ जलाने लाए हैं।।
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्त्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष।।
देव शास्त्र गुरु धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो: अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस फल को पाया है तुमने, उस पर हम ललचाए हैं।
परम मोक्ष फल पाने हे जिन!, फल चरणों में लाए हैं।।
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्त्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष।।
देव शास्त्र गुरु धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो: मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वसुधा पाने को यह, अर्घ्य बनाकर लाए हैं।
अष्टगुणों की सिद्धी पाने, तव चरणों में आए हैं।।
णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्त्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष।।
देव शास्त्र गुरु धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित पंचकल्याणक पदालंकृत सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सोलहकारण-रत्नत्रय-दशधर्म, पंच मेरू-नन्दीश्वर त्रिलोक सम्बन्धी समस्त कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, सिद्ध क्षेत्र अतिशय क्षेत्र त्रिकाल चौबीसी, विद्यमान बीस तीर्थंकर तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– मोक्ष महापद पाएँगे, करके शांती धार।
संयम धारण है विशद, इस जीवन का सार।।

।।शान्तये शान्तीधारा।।

रत्नत्रय को धारकर, पाएँगे शिव पंथ।
होंगे कर्म विनाश सब, साधू बन निर्ग्रन्थ।।

।।इत्याशीर्वाद पुष्पांजलि क्षिपेत।।

जयमाला

दोहा– पूजा के शुभ भाव से, कटे कर्म जंजाल।
महा समुच्चय रूप से, गाते हम जयमाल।।

(शम्भू छन्द)

कर्म घातियाँ नाश किए जो, वह अर्हत् कहलाते हैं।
कर्म रहित हो ज्ञान शरीरी, सिद्ध महापद पाते हैं।।
पंचाचार का पालन करते, रत्नत्रयधारी आचार्य।
उपाध्याय से शिक्षा पाते, धर्म भावनाधारी आर्य।।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ने हेतू, सर्व साधु नित करते यत्न।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण हम, पूज रहे हैं तीनों रत्न।।
जिनवर कथित धर्म है पावन, श्रेष्ठ अहिंसामयी परम।
अंग बाह्य अरु अंग प्रविष्टी, रूप कहा है जैनागम।।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य लोक में, कहे गये हैं मंगलकार।
घंटा तोरण ध्वज कलशायुत, चैत्यालय सोहे मनहार।।
देव शास्त्र गुरु की पूजा से, होता जीवों का कल्याण।
भरतैरावत ढाई द्वीप में, तीस चौबीसी रही महान।।
पाँच विदेहों में तीर्थंकर, विद्यमान कहलाए बीस।
जम्बू शाल्मलि तरु शाख के, जिन पद झुका रहे हम शीश।।
उत्तम क्षमा मार्दव आर्जव, शौच सत्य संयम तप जान।
त्यागाकिन्चन ब्रह्मचर्य दश, धर्म कहे शिव के सोपान।।
दर्श विशुद्धी आदिक सोलह, कारण भावना है शुभकार।
काल अनादी कष्ट निवारक, महामंत्र गाया णवकार।।
सहस्रनाम हैं तीर्थंकर के, जिनका जीव करें गुणगान।
नन्दीश्वर है दीप आठवाँ, जिस पर जिनगृह हैं भगवान।।
पंच मेरु में रहे चार वन, भद्रशाल नन्दन शुभकार।
तृतीय रहा सौमनस पाण्डुक, चौथा कहा है मंगलकार।।

चारों वन की चतुर्दिशा में, अकृत्रिम शास्वत जिनधाम।
रहे कुलाचल गजदन्तों पर, जिनबिम्बों पद विशद प्रणाम।।
हैं निर्वाण क्षेत्र मंगलमय, अतिशय क्षेत्र हैं अपरम्पार।
सहस्रकूट शुभ समवशरण है, मानस्तंभ भी मंगलकार।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर गाये चौबीस।।
पंच भरत ऐरावत में सब, तीर्थंकर हैं सात सौ बीस।
चौदह सौ बावन गणधर कई, वर्तमान के अन्य मुनीश।।
बाहुबली भरतेश पाण्डव, हनुमान लवकुश श्री राम।
पञ्च बालयति सर्व ऋद्धियाँ, और पूजते हम शिव धाम।
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष यह, पूज रहे पाँचों कल्याण।
जन्म भूमि है तीर्थ अयोध्या, जिसका रहे सदा श्रद्धान।
हम प्रत्यक्ष परोक्ष यहाँ से, पूज रहे सब तीरथ धाम।
वचन काय मन तीन योग से, करते बारम्बार प्रणाम।।

दोहा– पूजन की है भाव से, किया अल्प गुणगान।
जीवन शांती मय बने, पाएँ ''विशद'' कल्याण।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित पंचकल्याणक पदालंकृत सर्व जिनेश्वर श्री नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सोलह कारण-रत्नत्रय-दश धर्म, पंच मेरू-नन्दीश्वर, त्रिलोक एवं त्रिकाल सम्बन्धी समस्त कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, सिद्धक्षेत्र-अतिशय क्षेत्र त्रिकाल चौबीसी विद्यमान बीस तीर्थंकर तीन कम नो करोड़ गणधरादि मुनीश्वेरभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– हो प्रभावना धर्म की, हो शासन जयवन्त।
अन्तिम है यह भावना, पाएँ भव का अन्त।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री शान्ति-कुन्थु-अरहनाथ तीर्थंकर पूजा

(स्थापना)

नगर हस्तिनापुर में जन्में, शान्ति कुन्थु श्री अरह जिनेश।
कामदेव चक्री तीर्थंकर, त्रयपदधारी हुए विशेष।।
हुए चार कल्याणक जिनके, नगर हस्तिनापुर के धाम।
आह्वानम् करते हम उर में, क्रमशः करके चरण प्रणाम।।

दोहा– **पूजा करते आपकी, हे त्रैलोकी नाथ।**
शिवपद हमको दीजिए, झुका रहे पद माथ।।

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अर तीर्थंकर जिनेश्वरा:! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानम्। ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अर तीर्थंकर जिनेश्वरा:! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अर तीर्थंकर जिनेश्वरा:! अत्र सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

वीतराग की राह प्राप्त कर, तुम शिवपुर की राह चले।
त्रय रोगों के नाशक उर में, रत्नत्रय के फूल खिले।।
शांति कुंथु जिन अरहनाथ की, महिमा को हम गाते हैं।
चरण कमल में विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरहनाथ तीर्थंकरेभ्यः जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भावों में शीतलता लाकर, जीवन तरु को महकायें।
चन्दन अर्पित करके जिन पद, भवाताप को विनशायें।।
शांति कुंथु जिन अरहनाथ की, महिमा को हम गाते हैं।
चरण कमल में विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरहनाथ तीर्थंकरेभ्यः संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

पर का कर्त्ता माना निज को, निज पद को बिसराया है।
अक्षय पद शास्वत है मेरा, उसको कभी ना पाया है।।
शांति कुंथु जिन अरहनाथ की, महिमा को हम गाते हैं।
चरण कमल में विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरहनाथ तीर्थंकरेभ्यः अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

रंग बिरंगे पुष्प लोक में, अपनी आभा बिखराते।
कामबाण की बाधा हरने, पुष्प चढ़ाकर हर्षाते।।
शांति कुंथु जिन अरहनाथ की, महिमा को हम गाते हैं।
चरण कमल में विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरहनाथ तीर्थंकरेभ्यः कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा तृषा का रोग लगा है, जिससे भारी दुख पाये।
यह नैवेद्य चढ़ाकर भगवन, क्षुधा मिटाने हम आए।।
शांति कुंथु जिन अरहनाथ की, महिमा को हम गाते हैं।
चरण कमल में विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरहनाथ तीर्थंकरेभ्यः क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान दीप तुम ज्ञान ज्योति से, ज्योति मेरी जग जाए।
मिथ्या मोह महातम अपना, यहाँ नशाने हम आए।।
शांति कुंथु जिन अरहनाथ की, महिमा को हम गाते हैं।
चरण कमल में विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरहनाथ तीर्थंकरेभ्यः मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप जलाने से अग्नी में, नभ मण्डल को महकाए।
अष्ट कर्म का भेद आवरण, शिव पद पाने हम आए।।
शांति कुंथु जिन अरहनाथ की, महिमा को हम गाते हैं।
चरण कमल में विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरहनाथ तीर्थंकरेभ्यः अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋतु ऋतु के फल खाकर भी हम, तृप्त नहीं हो पाते हैं।
मोक्ष महाफल पाने हे जिन, फल यह चरण चढ़ाते हैं।।
शांति कुंथु जिन अरहनाथ की, महिमा को हम गाते हैं।
चरण कमल में विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरहनाथ तीर्थंकरेभ्यः मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्गती में सुख दुख पाकर, बारम्बार भ्रमाए हैं।
अष्टम वसुधा पाने चरणों, अर्घ्य बनाकर लाये हैं।।
शांति कुंथु जिन अरहनाथ की, महिमा को हम गाते हैं।
चरण कमल में विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरहनाथ तीर्थंकरेभ्य: अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

भादव कृष्ण सप्तमी को प्रभु, शांतिनाथ जिन गर्भ लिए।
श्रावण कृष्ण दशें कुन्थू जिन, गर्भ कल्याणक प्राप्त किए।।
फाल्गुण कृष्ण तीज अर स्वामी, गर्भ अवस्था शुभ पाई।
गर्भ शोध को इन्द्राज्ञा से, अष्ट कुमारिकाएँ आईं।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक सर्वमंगलकारी गर्भकल्याणक प्राप्त श्री शांति कुन्थु अरहनाथ जिनेद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण की चतुर्दशी को, शांतिनाथ ने जन्म लिया।
एकम शुक्ल वैसाख कुन्थु जिन, ने भू पर अवतार लिया।।
मंगशिर शुक्ला चतुर्दशी को, जन्मे अरहनाथ भगवान।
सुरगिरि पे सुर न्हवन कराए, विशद मनाए जन्म कल्याण।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक सर्वमंगलकारी जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शांति कुन्थु अरहनाथ जिनेद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण की चतुर्दशी को, तपधारे श्री शांतीनाथ।
एकम शुक्ल वैसाख कुन्थु जिन, संयमधारी हुए सनाथ।।
मंगसिर शुक्ल तिथि दशमी को, अरहनाथ संयम धारे।
इन्द्रो ने तव जिन चरणों में, भक्ति से बोले जयकारे।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक सर्वमंगलकारी तपकल्याणक प्राप्त श्री शांति कुन्थु अरहनाथ जिनेद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान शांति जिन शुक्ला, पौष दशे को प्रगटाए।
चैत्र शुक्ल तृतीया को कुन्थू, जिनवर विशद ज्ञान पाए।।

कार्तिक सुदि बारस को अर जिन, पाए अनुपम केवल ज्ञान।
विशद ज्ञान हो प्राप्त हमें, प्रभु करते हम चरणों गुणगान।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक सर्वमंगलकारी केवलज्ञान प्राप्त श्री शांति कुन्थु अरहनाथ जिनेद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण की चतुर्दशी को, शांति प्रभू पाए निर्वाण।
एकम् सुदि वैसाख कुन्थु जिन, सिद्ध शिला पर किए प्रयाण।।
अरहनाथ जी चैत अमावश, को पहुँचे थे मुक्ती धमा।।
हम भी यही भावना लेकर, करते चरणों विशद प्रणाम।।5।।

ॐ ह्रीं सर्वबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक सर्वमंगलकारी मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री शांति कुन्थु अरहनाथ जिनेद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

शांति कुंथु जिन अरह जी, हुए त्रैलोकी नाथ।
गाते है जयमाल हम, चरण झुकाते माथ।।

चौपाई

भरत क्षेत्र जानो शुभकारी, आर्य खण्ड है मंगलकारी।
जिसमें भारत देश बताया, उत्तर प्रदेश श्रेष्ठ शुभ गाया।
मेरठ जिला हैं जिसमें भाई, पास हस्तिनापुर सुखदाई।
ऋषभ नाथ जी जहाँ पे आये, नृप श्रेयांस आहार कराए।
यह पावन भूमि सुखदायी, त्रय तीर्थंकर जन्मे भाई।
शान्ति कुन्थु जिन अरह कहाए, यहाँ चार कल्याणक पाए।।
अश्वसेन राजा कहलाए, रानी ऐरा देवी पाए।
जिनके गृह में मंगल छाए, जन्म शांति जिनवर जी पाए।।
लाख वर्ष आयु के धारी, तप्त स्वर्ण सम थे अविकारी।
चालिस धनुष रही ऊँचाई, हिरण चिन्ह जिनका है भाई।।
पच्चिस सहस वर्ष तक स्वामी, रहे मण्डलेश्वर जिन नामी।
चक्रवर्ती पद स्वामी पाए, पच्चिस सहस वर्ष कहलाए।।

कामदेव पद पाने वाले, तीर्थंकर जिन रहे निराले।
गिरि सम्मेद शिखर से स्वामी, हुए आप मुक्ती पथ गामी॥
पञ्च हजार वर्ष फिर जानो, साधिक पल्य गये फिर मानो।
सूरसेन श्री मति के भाई, सुत जन्मे कुन्थु जिन राई॥
सहस पञ्चानवे वर्ष की स्वामी, आयु पाये अन्तर्यामी।
पैंतीस धनुष रही ऊँचाई, स्वर्ण रंग तन का था भाई॥
बकरा लक्षण पग में पाये, त्रय पद के धारी कहलाए।
पौने चौबिस सहस बताए, महामण्डलेश्वर को पद पाए॥
इतने वर्षों तक फिर जानो, चक्रवर्ति पद पाए मानो।
संयम आप स्वयं ही पाए, निज आतम का ध्यान लगाए॥
कर्म घातिया आप नशाए, केवल ज्ञान स्वयं प्रगटाए।
गिरि सम्मेद शिखर पे आये, कूँट ज्ञानधर से शिव पाए॥
ग्यारह सहस हीन फिर जानो, एक सहस्र कोटि पहिचानो।
इतना हीन पाव पल्य जाये, जन्म अरह जिनवर जी पाए॥
पिता सुदर्शन जी कहलाए, मात मित्र सेना जी गाए।
सहस चुरासी वर्ष की भाई, आयू अरह नाथ ने पाई॥
तीस धनुष तन की ऊँचाई, लक्षण मीन रहा सुखदायी।
इक्कीस सहस वर्ष शुभकारी, रहे मण्डलेश्वर पद धारी॥
इक्कीस सहस वर्ष तक जानो, चक्रवर्ति पद पाया मानो।
कामदेव प्रभु जी कहलाए, तीर्थंकर पद पा शिव पाए॥
गिरि सम्मेद शिखर पे आये, खड्गासन से मोक्ष सिधाए।
जिन चरणों हम शीश झुकाते, विशद भाव से अर्घ्य चढ़ाते॥

दोहा– त्रय रत्नों को प्राप्त कर, बने धर्म के ईश।
सुर नर मुनि तव चरण में, सदा झुकाते शीश॥

ॐ ह्रीं श्री शांति कुन्थु अरहनाथ तीर्थंकरेभ्य: जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– करते हैं हम वंदना, तव चरणों जिनराज।
हम भी पाए हे प्रभो! मोक्ष महल का ताज॥

(इत्याशीर्वाद) (पुष्पांजलि क्षिपेत)

प्रथम वलय:

दोहा- चउ संज्ञाएँ नाश के, बने हमारे भाव।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, पाने निज स्वभाव॥

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

शान्तिकुन्थुअर त्रय पदधारी, संयम धार बने अनगारी।
कामदेव चक्री कहलाए, तीर्थंकर की पदवी पाए॥
आप हुए त्रिभुवन के स्वामी, केवल ज्ञानी अन्तर्यामी।
हृदय कमल में मेरे आओ, मोक्ष महल का मार्ग दिखाओ॥
चरण प्रार्थना यही हमारी, दो आशीष हमें त्रिपुरारी।
विशद भावना हम यह भाते, तव चरणों में शीश झुकाते॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। ॐ ह्रीं श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

चार संज्ञा विनाशक जिन

(ज्ञानोदय छन्द)

मुनिव्रतों को जिसने धारा, बने कर्म आ करके दास।
तीर्थंकर पद पाया प्रभु ने, भोजन संज्ञा हुई विनाश॥
नगर हस्तिनापुर है पावन, शांति कुन्थु जिन अर का धाम।
भक्ति-भाव से चरण कमल में, करते बारम्बार प्रणाम॥1॥

ॐ ह्रीं आहार संज्ञा विनाशक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्भय होकर बीहड़ वन में, निज आतम में कीन्हा वास।
सप्त महामय भारी जग में, क्षण में उनका किया विनाश॥
नगर हस्तिनापुर है पावन, शांति कुन्थु जिन अर का धाम।
भक्ति-भाव से चरण कमल में, करते बारम्बार प्रणाम॥2॥

ॐ ह्रीं भय संज्ञा विनाशक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कामबली ने मोह पास में, सारे जग को बाँध लिया।
ब्रह्मभाव से मैथुन संज्ञा, को प्रभु ने निर्मूल किया॥
नगर हस्तिनापुर है पावन, शांति कुन्थु जिन अर का धाम।
भक्ति-भाव से चरण कमल में, करते बारम्बार प्रणाम॥3॥

ॐ ह्रीं मैथुन संज्ञा विनाशक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाह्याभ्यन्तर कहा परिग्रह, उसके होते चौबिस भेद।
परिग्रह की संज्ञा के नाशी, नाश किया है जिसने खेद॥
नगर हस्तिनापुर है पावन, शांति कुन्थु जिन अर का धाम।
भक्ति-भाव से चरण कमल में, करते बारम्बार प्रणाम॥4॥

ॐ ह्रीं परिग्रह संज्ञा विनाशक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– शान्तिकुन्थु अरहनाथ ने, संज्ञाएँ की नाश।
आत्म ध्यान से कर दिये, घातीकर्म विनाश॥

ॐ ह्रीं चतु: संज्ञा विनाशक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलय:

दोहा- आठों कर्म विनाशकर, हुए श्री के नाथ!
पुष्पाञ्जलि करके विशद, चरण झुकाते माथ॥

(द्वितीय वलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

शान्तिकुन्थुअर त्रय पदधारी, संयम धार बने अनगारी।
कामदेव चक्री कहलाए, तीर्थंकर की पदवी पाए॥
आप हुए त्रिभुवन के स्वामी, केवल ज्ञानी अन्तर्यामी।
हृदय कमल में मेरे आओ, मोक्ष महल का मार्ग दिखाओ॥
चरण प्रार्थना यही हमारी, दो आशीष हमें त्रिपुरारी।
विशद भावना हम यह भाते, तव चरणों में शीष झुकाते॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवोषट्

आह्वानम्। ॐ ह्रीं श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकणम्।

अष्ट कर्म विनाशक जिन

(छन्द जोगीरासा)

ज्ञानावरणी कर्म नाशकर, प्रभु ने पाया ज्ञान अनन्त।
द्रव्य चराचर एक साथ ही, जाने आप अनन्तानन्त॥
शांति कुन्थु जिन अरह नाथ पद, अर्घ्य चढ़ाते भाव विभोर।
विशद भावना भाते हैं हम, बढ़ें स्वयं शिव पद की ओर॥1॥

ॐ ह्रीं ज्ञानावरण कर्म विनाशक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म दर्शनावरणी नाशा, दर्शन पाए आप अनन्त।
द्रव्य चराचर एक साथ ही, देखे आप अनन्तानन्त॥
शांति कुन्थु जिन अरह नाथ पद, अर्घ्य चढ़ाते भाव विभोर।
विशद भावना भाते हैं हम, बढ़ें स्वयं शिव पद की ओर॥2॥

ॐ ह्रीं दर्शनावरणी कर्म विनाशक परम पुण्डरीक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म वेदनीय नाश किए प्रभु, पाए अव्याबाध स्वरूप।
वीतराग जिनराज प्रभु के, पद में झुकते हैं शत् भूप॥
शांति कुन्थु जिन अरह नाथ पद, अर्घ्य चढ़ाते भाव विभोर।
विशद भावना भाते हैं हम, बढ़ें स्वयं शिव पद की ओर॥3॥

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म विनाशक परम पुण्डरीक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहित करता कर्म मोहनीय, उसका प्रभु जी घात किए।
'विशद' ज्ञान के द्वारा जिनवर, सुख अनन्त को प्राप्त किए।
शांति कुन्थु जिन अरह नाथ पद, अर्घ्य चढ़ाते भाव विभोर।
विशद भावना भाते हैं हम, बढ़ें स्वयं शिव पद की ओर॥4॥

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म विनाशक परम पुण्डरीक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आयु कर्म के भेद चार हैं, उनका आप विनाश किए।
अवगाहन गुण पाने वाले, केवलज्ञान प्रकाश किए॥

शांति कुन्थु जिन अरह नाथ पद, अर्घ्य चढ़ाते भाव विभोर।
विशद भावना भाते हैं हम, बढ़ें स्वयं शिव पद की ओर॥5॥

ॐ ह्रीं आयु कर्म विनाशक परम पुण्डरीक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम कर्म के भेद अनेकों, उनका प्रभु विनाश किए।
सूक्ष्मत्व गुण प्रगटाने वाले, केवलज्ञान प्रकाश किए॥
शांति कुन्थु जिन अरह नाथ पद, अर्घ्य चढ़ाते भाव विभोर।
विशद भावना भाते हैं हम, बढ़ें स्वयं शिव पद की ओर॥6॥

ॐ ह्रीं नाम कर्म विनाशक परम पुण्डरीक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गोत्र कर्म से जग के प्राणी, उच्च नीच पद पाते हैं।
अगुरुलघु गुण गोत्र कर्म के, नाश किए प्रगटाते हैं॥
शांति कुन्थु जिन अरह नाथ पद, अर्घ्य चढ़ाते भाव विभोर।
विशद भावना भाते हैं हम, बढ़ें स्वयं शिव पद की ओर॥7॥

ॐ ह्रीं गोत्र कर्म विनाशक परम पुण्डरीक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तराय विघ्नों का कर्त्ता, विघ्न डालता कई प्रकार।
अन्तराय के नाशक जिनको, वन्दन करता बारम्बार॥
शांति कुन्थु जिन अरह नाथ पद, अर्घ्य चढ़ाते भाव विभोर।
विशद भावना भाते हैं हम, बढ़ें स्वयं शिव पद की ओर॥8॥

ॐ ह्रीं अन्तराय कर्म विनाशक परम पुण्डरीक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– अष्ट कर्म का नाशकर, अष्ट गुणों को पाय।
अष्टम भू पर जा बसे, सिद्ध प्रभु कहलाय॥

ॐ ह्रीं अष्टकर्म विनाशक परम पुण्डरीक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलयः

दोहा- सोलह कारण भावना, भाते हैं जो जीव।
तीर्थंकर बनते स्वयं, पाते पुण्य अतीव॥

(तृतीय वलस्योपरि पुष्पाऽजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

शान्तिकुन्थुअर त्रय पदधारी, संयम धार बने अनगारी।
कामदेव चक्री कहलाए, तीर्थंकर की पदवी पाए॥
आप हुए त्रिभुवन के स्वामी, केवल ज्ञानी अन्तर्यामी।
हृदय कमल में मेरे आओ, मोक्ष महल का मार्ग दिखाओ॥
चरण प्रार्थना यही हमारी, दो आशीष हमें त्रिपुरारी।
विशद भावना हम यह भाते, तव चरणों में शीश झुकाते॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। ॐ ह्रीं श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सोलहकारण भावना

(ज्ञानोदय छंद)

मिथ्या भाव रहेगा जब तक, दृष्टी सम्यक् नहीं बने।
दरश विशुद्धी हो जाये तो, कर्म घातिया शीघ्र हने॥
त्रय पद धारी त्रय तीर्थंकर, के पद अर्घ्य चढ़ाते हैं।
मुक्ती पद पाने को जिन पद, सादर शीश झुकाते हैं॥1॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

देवशास्त्र गुरु के प्रति भक्ति, कर्म पाप का हरण करे।
दर्शन ज्ञान चरित उपचारिक, विनय भाव जो हृदय धरे॥
त्रय पद धारी त्रय तीर्थंकर, के पद अर्घ्य चढ़ाते हैं।
मुक्ती पद पाने को जिन पद, सादर शीश झुकाते हैं॥2॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वदोषरहित विनयसम्पन्नभावनायै सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नव कोटि से शील व्रतों का, निरतिचार पालन करता।
सुर नर किन्नर से पूजित हो, कोष पुण्य से वह भरता॥
त्रय पद धारी त्रय तीर्थंकर, के पद अर्घ्य चढ़ाते हैं।
मुक्ती पद पाने को जिन पद, सादर शीश झुकाते हैं॥3॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वदोषरहित अनतिचारशीलव्रतभावनायै सर्वकर्मबन्धन विमुक्त Jh 'kkfUrdqUFkqvjgukFk जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर की ॐकार मय, दिव्य देशना है पावन।
नित्य निरन्तर ज्ञान योग से, भाता है जो मनभावन।
त्रय पद धारी त्रय तीर्थंकर, के पद अर्घ्य चढ़ाते हैं।
मुक्ती पद पाने को जिन पद, सादर शीश झुकाते हैं॥4॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वदोषरहित अभीक्षणज्ञानोपयोगभावनायै सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म और उसके फल में भी, हर्षभाव जिसको आवें।
सुत दारा धन का त्यागी हो, वह संवेग भाव पावें॥
त्रय पद धारी त्रय तीर्थंकर, के पद अर्घ्य चढ़ाते हैं।
मुक्ती पद पाने को जिन पद, सादर शीश झुकाते हैं॥5॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वदोषरहित संवेगभावनायै सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वशक्ति को नहीं छिपाकर, त्याग भाव मन में लावे।
दान करे जो सत पात्रों में, त्याग शक्तिशः कहलावे॥
त्रय पद धारी त्रय तीर्थंकर, के पद अर्घ्य चढ़ाते हैं।
मुक्ती पद पाने को जिन पद, सादर शीश झुकाते हैं॥6॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वदोषरहित शक्तितस्त्यागभावनायै सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

बाह्याभ्यन्तर सुतप करे जो, निज शक्ती को प्रगटावे।
निज आतम की शुद्धि हेतु शुभ, सुतप शक्तिशः वह पावे॥
त्रय पद धारी त्रय तीर्थंकर, के पद अर्घ्य चढ़ाते हैं।
मुक्ती पद पाने को जिन पद, सादर शीश झुकाते हैं॥7॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वदोषरहित शक्तितस्तप:भावनायै सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

साता और असाता पाकर, मन में समता उपजावे।
मरण समाधी सहित करे तो, साधु समाधि कहलावे।
त्रय पद धारी त्रय तीर्थंकर, के पद अर्घ्य चढ़ाते हैं।
मुक्ती पद पाने को जिन पद, सादर शीश झुकाते हैं॥8॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वदोषरहित साधुसमाधिभावनायै सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

साधक तन से करे साधना, उसमें कोइ बाधा आवे।
दूर करे अनुराग भाव से, वैय्यावृत्ती कहलावे॥
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे॥9॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वदोषरहित वैय्यावृत्तिभावनायै सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म घातिया अरि के नाशक, श्री जिन अर्हत पद पावें।
दोष रहित उनकी भक्ती शुभ, अर्हत भक्ति कहलावे।
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे॥10॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वदोषरहित अर्हद्भक्तिभावनायै सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचाचार का पालन करते, शिक्षा दीक्षा के दाता।
उनकी भक्ती करना भाई, आचार्य भक्ती कहलाता॥
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे॥11॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वदोषरहित आचार्यभक्तिभावनायै सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुश्रुत धारी गुरु अनगारी, मुनि जिनसे शिक्षा पावें।
उपाध्याय की भक्ती करना, बहुश्रुत भक्ती कहलावे॥
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे॥12॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वदोषरहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशांग वाणी जिनवर की, द्रव्य तत्व को दर्शावे।
माँ जिनवाणी की भक्ती हो, प्रवचन भक्ती कहलावे॥
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे॥13॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वदोषरहित प्रवचनभक्तिभावनायै सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

यत्नाचार सहित चर्या से, षट् आवश्यक पाल रहे।
आवश्यक अपरिहार्य भावना, मुनिवर स्वयं सम्हाल रहे।
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे॥14॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वदोषरहित आवश्यकापरिहार्यभावनायै सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

देव वन्दना भक्ति महोत्सव, रथ यात्रा पूजा तप दान।
मोह तिमिर का नाश प्रकाशक, ये ही धर्म प्रभावना मान॥
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे॥15॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वदोषरहित मार्गप्रभावनाभावनायै सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आर्य पुरुष त्यागी मुनिवर से, वात्सल्य का भाव रहे।
गाय और बछड़े सम प्रीति, प्रवचन वात्सल्य देव कहे॥
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे॥16॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वदोषरहित वात्सल्यभावनायै सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलह कारण भाय भावना, तीर्थंकर पद पाते हैं।
अर्घ चढ़ाते भक्तिभाव से, उनके गुण को गाते हैं॥
तीर्थंकर पदवी के हेतू, सोलह कारण भाव कहे।
अर्घ समर्पित करते जिन पद, मेरे उर में भाव रहे॥7॥॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वदोषरहित दर्शनविशुद्धि आदि सोलहकारणभावनायै सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

बत्तीस इन्द्र प्रभु की पूजा, भाव सहित करते हैं आन।
पुष्पाञ्जलि से पूजा करके, चरणों में करते गुणगान॥

(चतुर्थ वलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

शान्तिकुन्थुअर त्रय पदधारी, संयम धार बने अनगारी।
कामदेव चक्री कहलाए, तीर्थंकर की पदवी पाए॥
आप हुए त्रिभुवन के स्वामी, केवल ज्ञानी अन्तर्यामी।
हृदय कमल में मेरे आओ, मोक्ष महल का मार्ग दिखाओ॥
चरण प्रार्थना यही हमारी, दो आशीष हमें त्रिपुरारी।
विशद भावना हम यह भाते, तव चरणों में शीष झुकाते॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानंम्। ॐ ह्रीं श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(बत्तीस देव इन्द्र पूजा)

(चौपाई)

असुर इन्द्र परिवार के साथ, श्री जिन चरण झुकाएँ माथ।
करे भाव से जो गुणगान, त्रय तीर्थंकर के पद आन॥1॥

ॐ ह्रीं असुरकुमारेण परिवार सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाग इन्द्र लावे परिवार, भक्ती करने अपरम्पार।
करे भाव से जो गुणगान, त्रय तीर्थंकर के पद आन॥2॥

ॐ ह्रीं नागेन्द्र इन्द्र परिवार सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युतेन्द्र लावे परिवार, अर्चा करने अतिशयकार।
करे भाव से जो गुणगान, त्रय तीर्थंकर के पद आन॥3॥

ॐ ह्रीं विद्युतेन्द्र परिवार सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुपर्णेन्द्र लावे परिवार, जिन गुणगावे मंगलकार।
करे भाव से जो गुणगान, त्रय तीर्थंकर के पद आन॥4॥

ॐ ह्रीं सुपर्णेन्द्र परिवार सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि इन्द्र लावे परिवार, अर्घ्य बनाए अपरम्पार।
करे भाव से जो गुणगान, त्रय तीर्थंकर के पद आन॥5॥

ॐ ह्रीं अग्नि इन्द्र परिवार सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मारुतेन्द्र लावे परिवार, जिन अर्चा को विस्मयकार।
करे भाव से जो गुणगान, त्रय तीर्थंकर के पद आन॥6॥

ॐ ह्रीं मारुतेन्द्र परिवार सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्तनितेन्द्र लावे परिवार, भक्ती करने मंगलकार।
करे भाव से जो गुणगान, त्रय तीर्थंकर के पद आन॥7॥

ॐ ह्रीं स्तनितेन्द्र परिवार सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सागरेन्द्र परिवार समेत, आता है भक्ती के हेत।
करे भाव से जो गुणगान, त्रय तीर्थंकर के पद आन॥8॥

ॐ ह्रीं सागरेन्द्र परिवार सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वीप इन्द्र परिवार समेत, जिन चरणों भक्ती के हेत।
करे भाव से जो गुणगान, त्रय तीर्थंकर के पद आन॥9॥

ॐ ह्रीं द्वीप इन्द्र परिवार सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिग्सुरेन्द्र भक्ति के हेत, अर्चा करता भाव समेत।
करे भाव से जो गुणगान, त्रय तीर्थंकर के पद आन॥10॥

ॐ ह्रीं दिक्सुरेन्द्र परिवार सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किन्नरेन्द्र लावे परिवार, ढ़ोक लगावे बारम्बार।
करे भाव से जो गुणगान, त्रय तीर्थंकर के पद आन॥11॥

ॐ ह्रीं किन्नरेन्द्र परिवार सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किम्पुरुषेन्द्र लावे परिवार, पूजा करने अपरम्पार।
करे भाव से जो गुणगान, त्रय तीर्थंकर के पद आन॥12॥

ॐ ह्रीं किम्पुरूषेन्द्र परिवार सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गन्धर्व इन्द्र भक्ति के साथ, आकर विशद झुकाए माथ।
करे भाव से जो गुणगान, त्रय तीर्थंकर के पद आन॥13॥

ॐ ह्रीं गन्धर्व इन्द्र परिवार सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष इन्द्र लावे परिवार, जिन पूजा को बारम्बार।
करे भाव से जो गुणगान, त्रय तीर्थंकर के पद आन॥14॥

ॐ ह्रीं यक्ष इन्द्र परिवार सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महोरगेन्द्र परिवार समेत, आवे जिन भक्ती के हेत।
करे भाव से जो गुणगान, त्रय तीर्थंकर के पद आन॥15॥

ॐ ह्रीं महोरगेन्द्र परिवार सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राक्षसेन्द्र परिवार समेत, आता है भक्ति के हेत।
पूजा करता सह सम्मान, त्रय तीर्थंकर के पद आन॥16॥

ॐ ह्रीं राक्षस इन्द्र परिवार सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूत इन्द्र लावे परिवार, जिन चरणों में अरपम्पार।
पूजा करता सह सम्मान, त्रय तीर्थंकर के पद आन॥17॥

ॐ ह्रीं भूत इन्द्र परिवार सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पिशाचेन्द्र परिवार समेत, जिन चरणों भक्ती के हेत।
पूजा करता सह सम्मान, त्रय तीर्थंकर के पद आन॥18॥

ॐ ह्रीं पिशाचेन्द्र परिवार सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छंद)

चन्द्र इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आता है।
तीर्थंकर के श्रीचरणों में, सादर शीश झुकाता है॥19॥

ॐ ह्रीं चन्द्र इन्द्र परिवार सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूर्य इन्द्र परिवार सहित मिल, जिन पूजा को आता है।
तीर्थंकर की पूजा करके, सादर शीश झुकाता है॥20॥

ॐ ह्रीं रवि इन्द्र परिवार सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सौधर्मेन्द्र सहित भक्ती से, जिन पूजा को आता है।
तीर्थंकर की पूजा को, परिवार साथ में लाता है॥21॥

ॐ ह्रीं सौधर्म इन्द्र परिवार सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ईशानेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आता है।
तीर्थंकर के पद पंकज में, उत्तम अर्घ्य चढ़ाता है॥22॥

ॐ ह्रीं ईशान इन्द्र परिवार सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सानत इन्द्र सहित भक्ति से, अर्घ्य चढ़ाने आता है।
तीर्थंकर के पद पंकज में, सादर शीश झुकाता है॥23॥

ॐ ह्रीं सानतेन्द्र परिवार सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माहेन्द्र इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आता है।
तीर्थंकर के पद पंकज में, सादर शीश झुकाता है॥24॥

ॐ ह्रीं माहेन्द्र इन्द्र परिवार सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित भक्ति से, ब्रह्म इन्द्र भी आता है।
तीर्थंकर के पद पंकज में, सादर शीश झुकाता है॥25॥

ॐ ह्रीं ब्रह्म इन्द्र परिवार सहितायश्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लान्तवेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आता है।
तीर्थंकर के पद पंकज में, सादर शीश झुकाता है॥26॥

ॐ ह्रीं लान्तवेन्द्र परिवार सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्र इन्द्र आता जिन चरणों, निज परिवार को लाता है।
तीर्थंकर के पद पंकज में, सादर शीश झुकाता है॥27॥

ॐ ह्रीं शुक्र इन्द्र परिवार सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शतारेन्द्र परिवार सहित, जिन अर्चा करने आता है।
तीर्थंकर के पद पंकज में, सादर शीश झुकाता है॥28॥

ॐ ह्रीं शतारेन्द्र परिवार सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित भक्ती से, आनतेन्द्र भी आता है।
तीर्थंकर के पद पंकज में, सादर शीश झुकाता है॥29॥

ॐ ह्रीं आनतेन्द्र परिवार सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणतेन्द्र परिवार सहित, जिन भक्ति करने आता है।
तीर्थंकर के पद पंकज में, सादर शीश झुकाता है॥30॥

ॐ ह्रीं प्राणतेन्द्र परिवार सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आरणेन्द्र जिन भक्ती करने, निज परिवार भी लाता है।
तीर्थंकर के पद पंकज में, सादर शीश झुकाता है॥32॥

ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्र परिवार सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवनालय व्यन्तरवासी अरु, इन्द्र स्वर्ग से आते हैं।
झूम झूमकर नृत्य गान कर, पूजन श्रेष्ठ रचाते हैं॥
शांतिकुन्थु अर जिन के चरणों, पावन अर्घ्य चढ़ाते हैं।
विशद भाव से श्री चरणों में, अपना शीश झुकाते हैं॥33॥

ॐ ह्रीं द्वात्रिंशद इन्द्र परिवार सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चम वलयः

दोहा– दश धर्मों को प्राप्त जिन, गुण पाए छियालीस।
आठ मूल गुण सिद्ध के, तिन्हें झुकाएँ शीश॥

(पंचम वलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

शान्तिकुन्थुअर त्रय पदधारी, संयम धार बने अनगारी।
कामदेव चक्री कहलाए, तीर्थंकर की पदवी पाए॥
आप हुए त्रिभुवन के स्वामी, केवल ज्ञानी अन्तर्यामी।
हृदय कमल में मेरे आओ, मोक्ष महल का मार्ग दिखाओ॥
चरण प्रार्थना यही हमारी, दो आशीष हमें त्रिपुरारी।
विशद भावना हम यह भाते, तव चरणों में शीश झुकते॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। ॐ ह्रीं श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जन्म के अतिशय

(नरेन्द्र छंद)

दश अतिशय पावें प्रभु पावन, निर्मल सुखदाई।
स्वेद रहित जिनवर का तन है, अति पावन भाई॥
शांति कुन्थु अरनाथ हुए हैं, 'विशद' ज्ञान धारी।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगलकारी॥1॥

ॐ ह्रीं स्वेदरहित सहजातिशयधारक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तन है मल मूत्र रहित शुभ, अतिपावन भाई।
भव्यों को आह्लादित करता, निर्मल सुखदाई॥
शांति कुन्थु अरनाथ हुए हैं, 'विशद' ज्ञान धारी।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगलकारी॥2॥

ॐ ह्रीं नीहाररहित सहजातिशयधारक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय निर्वपामीति स्वाहा।

समचतुस्र संस्थान प्रभू का, सुंदर सुखदाई।
घट बढ़ अंग न होवे कोई, जिन की प्रभुताई॥
शांति कुन्थु अरनाथ हुए हैं, 'विशद' ज्ञान धारी।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगलकारी॥3॥

ॐ ह्रीं श्वेत रुधिर सहजातिशयधारक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वज्रवृषभ नाराच संहनन, श्री जिनेन्द्र पाए।
परमौदारिक तन का बल, प्रभु अतिशय प्रगटाए॥
शांति कुन्थु अरनाथ हुए हैं, 'विशद' ज्ञान धारी।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगलकारी॥4॥

ॐ ह्रीं समचतुष्क संस्थान सहजातिशयधारक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित परम सुगंधित श्री जिन, मनहर तन पाए।
तीर्थंकर प्रकृति के कारण, अतिशय दिखलाए॥
शांति कुन्थु अरनाथ हुए हैं, 'विशद' ज्ञान धारी।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगलकारी॥5॥

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराच संहनन सहजातिशश्धारक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रूप सुसुंदर महा मनोहर, श्री जिनवर पाए।
अतिशय रूप के धारी जिनके, पावन गुण गाए॥
शांति कुन्थु अरनाथ हुए हैं, 'विशद' ज्ञान धारी।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगलकारी॥6॥

ॐ ह्रीं अतिशयरूप सहजातिशयधारक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ अधिक इक सहस सुलक्षण, तन में कहलाए।
जन्म होत ही श्री जिनवर ने, मंगलमय पाए॥
शांति कुन्थु अरनाथ हुए हैं, 'विशद' ज्ञान धारी।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगलकारी॥7॥

ॐ ह्रीं सुगंधित तन सहजातिशयधारक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के तन में रक्त मनोहर, श्वेत वर्ण भाई।
यह अतिशय अनुपम कहलाए, प्रभु की प्रभुताई॥
शांति कुन्थु अरनाथ हुए हैं, 'विशद' ज्ञान धारी।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगलकारी॥8॥

ॐ ह्रीं सहस्राष्टलक्षण सहजातिशयधारक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन-जन का मन मोहित करती, हित-मित प्रिय वाणी।
अतिशय अनुपम मंगलमय है, जग की कल्याणी॥
शांति कुन्थु अरनाथ हुए हैं, 'विशद' ज्ञान धारी।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगलकारी॥9॥

ॐ ह्रीं अतुल्यबल सहजातिशयधारक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व जहाँ में अतिशयकारी, बल जिनवर पाए।
भक्ति भाव से सुर नर प्रभु के, चरणों सिर नाए॥
शांति कुन्थु अरनाथ हुए हैं, 'विशद' ज्ञान धारी।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगलकारी॥10॥

ॐ ह्रीं प्रियहितवचन सहजातिशयधारक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

10 केवलज्ञान के अतिशय (रोला छंद)

सौ योजन दुर्भिक्ष न होवे, जहाँ प्रभु का आसन हो।
पापी कामी चोर न बहरे, जहाँ प्रभु का शासन हो॥
शांतिकुन्थुजिन अरहनाथ जी, ज्ञान के अतिशय पाए हैं।
जिनके चरणों में यह पावन अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥11॥

ॐ ह्रीं गव्यूति शत् चतुष्ट सुभिक्षत्व घातिक्षय जातिशयधारक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होय गमन आकाश प्रभु का, यह अतिशय दिखलाते हैं।
नृत्यगान करते हैं सुर नर, मन में अति हर्षाते हैं॥
शांतिकुन्थुजिन अरहनाथ जी, ज्ञान के अतिशय पाए हैं।
जिनके चरणों में यह पावन अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥12॥

ॐ ह्रीं आकाशगमन घातिक्षय जातिशयधारक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व प्राणियों के मन में शुभ, दया भाव आ जाता है।
प्रभु के आने से अदया का, नाम स्वयं खो जाता है॥
शांतिकुन्थुजिन अरहनाथ जी, ज्ञान के अतिशय पाए हैं।
जिनके चरणों में यह पावन अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥13॥

ॐ ह्रीं अदयाभाव घातिक्षय जातिशय धारक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर नर पशु कृत और अचेतन, कोइ उपसर्ग नहीं होवें।
महिमा है तीर्थंकर पद की, आप स्वयं सारे खोवें॥
शांतिकुन्थुजिन अरहनाथ जी, ज्ञान के अतिशय पाए हैं।
जिनके चरणों में यह पावन अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥14॥

ॐ ह्रीं कवलाहार घातिक्षय जातिशय धारक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा रोग से पीड़ित है जग, बिन आहार नहीं रहते।
क्षुधा वेदना को जीते प्रभु, कवलाहार नहीं करते॥
शांतिकुन्थुजिन अरहनाथ जी, ज्ञान के अतिशय पाए हैं।
जिनके चरणों में यह पावन अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥15॥

ॐ ह्रीं उपसर्गाभाव घातिक्षय जातिशय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण के बीच विराजे, पूर्व दिशा सम्मुख होवें।
चतुर्दिशा में दर्शन हो शुभ, भव्य जीव जड़ता खोवें॥
शांतिकुन्थुजिन अरहनाथ जी, ज्ञान के अतिशय पाए हैं।
जिनके चरणों में यह पावन अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥16॥

ॐ ह्रीं छायारहित घातिक्षय जातिशय धारक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब विद्या के ईश्वर हैं प्रभु, सर्व लोक के अधीपती।
सुर नरेन्द्र चरणों आ झुकते, गणधर मुनिवर और यती॥
शांतिकुन्थुजिन अरहनाथ जी, ज्ञान के अतिशय पाए हैं।
जिनके चरणों में यह पावन अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥17॥

ॐ ह्रीं छायारहित घातिक्षय जातिशय धारक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छाया रहित प्रभु का तन है, कैसा विस्मयकारी है।
मूर्त पुद्‌गलों से निर्मित है, सुन्दर अरू मनहारी है॥
शांतिकुन्थुजिन अरहनाथ जी, ज्ञान के अतिशय पाए हैं।
जिनके चरणों में यह पावन अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥18॥

ॐ ह्रीं अक्षस्पंदरहित घातिक्षयजातिशय धारक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बढ़े नहीं नख केश प्रभु के, ज्यों के त्यों ही रहते हैं।
तीर्थंकर जिन जिनवाणी में, तीन काल यह कहते हैं॥
शांतिकुन्थुजिन अरहनाथ जी, ज्ञान के अतिशय पाए हैं।
जिनके चरणों में यह पावन अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥19॥

ॐ ह्रीं समान नखकेशत्व घातिक्षय जातिक्षय धारक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

निर्निमेष दृग रहते जिनके, नहीं झपकते पलक कभी।
नाशादृष्टी रहे सदा ही, ऐसा कहते देव सभी॥
शांतिकुन्थुजिन अरहनाथ जी, ज्ञान के अतिशय पाए हैं।
जिनके चरणों में यह पावन अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥20॥

ॐ ह्रीं अक्षस्पंद रहित घातिक्षय जातिशय धारक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

14 देवकृत अतिशय (छन्द जोगीरासा)

शुभ दिव्य देशना जिनवर की सर्वार्धमागधी भाषा में।
यह देवों का अतिशय मानो, समझो मागध परिभाषा में॥
जिन शांतिकुन्थुअर के चरणों सुर, भक्ति करे अतिशयकारी।
हम अर्घ्य चढ़ाते यह पावन, मम जीवन हो मंगलकारी॥21॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वार्धमागधीभाषादेवोपुनीतातिशय सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस ओर प्रभु के चरण पड़े, जन जन में मैत्री भाव रहे।
न बैर विरोध रहे क्षणभर, जग में खुशियों की धार बहे।
जिन शांतिकुन्थुअर के चरणों सुर, भक्ति करे अतिशयकारी।
हम अर्घ्य चढ़ाते यह पावन, मम जीवन हो मंगलकारी॥22॥

ॐ ह्रीं श्री सवजीवमैत्रीभावदेवोपुनीतातिशय सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर का गमन जहाँ होता, तो सर्व दिशाएँ हो निर्मल।
शुभ देव सभी अतिशय करते, धो देते हैं सारा कलमल।
जिन शांतिकुन्थुअर के चरणों सुर, भक्ति करे अतिशयकारी।
हम अर्घ्य चढ़ाते यह पावन, मम जीवन हो मंगलकारी॥23॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वदिग्‌निर्मलत्वदेवोपुनीतातिशय सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण जिनवर का लगते, हो जाए तब निर्मल आकाश।
चमत्कार देवों का मानों, करते सब दोषों का नाश॥
जिन शांतिकुन्थुअर के चरणों सुर, भक्ति करे अतिशयकारी।
हम अर्घ्य चढ़ाते यह पावन, मम जीवन हो मंगलकारी॥24॥

ॐ ह्रीं श्री शरदकालवन्निर्मलगगनदेवोपुनीतातिशय सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण प्रभु का आते ही, खिलते एक साथ फल-फूल।
भर जाते हैं खेत धान्य से, तरुवर झुक जाते अनुकूल॥
जिन शांतिकुन्थुअर के चरणों सुर, भक्ति करे अतिशयकारी।
हम अर्घ्य चढ़ाते यह पावन, मम जीवन हो मंगलकारी॥25॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वर्तुफलादितरुपरिणामदेवोपुनीताशिय सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के चरण जहाँ पड़ जाते, भू कंचनवत हो जाती है।
वह ज्यों ज्यों आगे बढ़ते जाते, दर्पणवत होती जाती है॥
जिन शांतिकुन्थुअर के चरणों सुर, भक्ति करे अतिशयकारी।
हम अर्घ्य चढ़ाते यह पावन, मम जीवन हो मंगलकारी॥26॥

ॐ ह्रीं श्री आदर्शतलप्रतिमारमणीयदेवोपुनीतातिशय सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

गगन मध्य ज्यों पग रखते सुर, स्वर्ण कमल रचते पावन।
वह सात सात आगे पीछे, इक मध्य पंचदश मनभावन॥
जिन शांतिकुन्थुअर के चरणों सुर, भक्ति करे अतिशयकारी।
हम अर्घ्य चढ़ाते यह पावन, मम जीवन हो मंगलकारी॥27॥

ॐ ह्रीं श्री चरणकमलतलरचितस्वर्णदेवोपुनीतातिशय सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर इन्द्र नरेन्द्र सभी मिलकर, भक्ती से जय जयकार करें।
आओ आओ सब भक्ति करें, वे चारों ओर पुकार करें॥
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम जीवन हो मंगलकारी॥28॥

ॐ ह्रीं श्री एतैतैति चतुर्णिकायामरपरापराह्वानदेवोपुनीतातिशय सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्व. स्वाहा।

चलती है मन्द सुगन्ध पवन, सब व्याधी विषम विनाश करे।
जन-जन को अति सुरभित करती, मन में अतिशय उल्लास भरे।
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम जीवन हो मंगलकारी॥29॥

ॐ ह्रीं श्री सुगन्धितविहरणमनुगतवायुत्वदेवोपुनीतातिशय सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्व. स्वाहा।

सुर वृष्टि करें गंधोदक की, मन में अति मंगल मोद भरें।
ये चमत्कार शुभ भक्ती का, वह भक्ती मेघ कुमार करें।
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम जीवन हो मंगलकारी॥30॥

ॐ ह्रीं श्री मेघकुमारकृतगन्धोदकवृष्टिदेवोपुनीतातिशय सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्व. स्वाहा।

सुर पवन कुमार देव मिलकर, शुभ अतिशय खूब दिखाते हैं।
धूली कंटक से रहित भूमि, पर प्रभु का गमन कराते हैं॥
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम जीवन हो मंगलकारी॥31॥

ॐ ह्रीं श्री वायुकुमारोपशमितधूलिकण्ठकादिदेवोपुनीतातिशय सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्व. स्वाहा।

शुभ परमानन्द मिले जन-जन को, मन आनन्दित हो जाता है।
तव रोम-रोम पुलकित हो जाए, जो प्रभु का दर्शन पाता है॥
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम जीवन हो मंगलकारी॥32॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वजनपरमानन्दत्वदेवोपुनीतातिशय सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ धर्म चक्र को सिर पर रखकर, यक्ष चलें आगे-आगे।
यह है प्रताप अतिशयकारी, शुभ बाधा स्वयं दूर भागे॥
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ति करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम जीवन हो मंगलकारी॥33॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मचक्रचतुष्टयदेवोपुनीतातिशय सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

है कलश ताल दर्पण प्रतीक, शुभ छत्र चंवर ध्वज अरु भृंगार।
शुभ मंगल द्रव्य आठ देवों के, होते हैं जग में सुखकार॥
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ति करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम जीवन हो मंगलकारी॥34॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टमंगलद्रव्यदेवोपुनीतातिशय सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंत चतुष्टय

(वेसरी छन्द)

ज्ञानानन्त प्रभु प्रगटाए, ज्ञानावरणी कर्म नशाए।
श्री जिनेन्द्र की महिमा न्यारी, सारे जग में मंगलकारी॥35॥

ॐ ह्रीं अनन्त ज्ञान सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्श अनन्त प्राप्त कर स्वामी, हुए लोक में अन्तर्यामी।
श्री जिनेन्द्र की महिमा न्यारी, सारे जग में मंगलकारी॥36॥

ॐ ह्रीं अनन्त दर्शन सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुखानन्त प्रगटाने वाले, अर्हत् जग में रहे निराले।
श्री जिनेन्द्र की महिमा न्यारी, सारे जग में मंगलकारी॥37॥

ॐ ह्रीं अनन्त सुख सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वीर्यानन्त के धारी गाये, अन्तराय प्रभु कर्म नशाए।
श्री जिनेन्द्र की महिमा न्यारी, सारे जग में मंगलकारी॥38॥

ॐ ह्रीं अनन्त वीर्य सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट प्रातिहार्य

(नरेन्द्र छन्द)

शत इन्द्रों से अर्चित अर्हत्, प्रातिहार्य वसु पाये।
'तरु अशोक' शुभ प्रातिहार्य जिन, विशद आप प्रगटाये॥
शत इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की हम महिमा गाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते॥39॥

ॐ ह्रीं तरु अशोक सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सघन 'पुष्प की वृष्टी' करके, नभ में सुर हर्षाते।
ऊर्ध्वमुखी हो पुष्प बरसते, जिन महिमा दिखलाते॥
शत इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की हम महिमा गाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते॥40॥

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव शरण में हुए अलंकृत, 'चौसठ चँवर' ढुराते।
श्वेत चवर ये नम्रभूत हो, विनय पाठ सिखलाते॥
शत इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की हम महिमा गाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते॥41॥

ॐ ह्रीं चतुःषष्टि चंवर सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घाति कर्म का क्षय होते ही, भामण्डल प्रगटावे।
कोटि सूर्य की कांति जिसके, आगे भी शर्मावे॥
शत इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की हम महिमा गाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते॥42॥

ॐ ह्रीं भामण्डल सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आओ-आओ जग के प्राणी, प्रभु जगाने आये।
श्रेष्ठ 'दुन्दुभी' के द्वारा शुभ, वाद्य बजा के गाये॥
शत इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की हम महिमा गाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते॥43॥

ॐ ह्रीं देव दुंदुभि सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक के ईश प्रभू हैं, 'तीन छत्र' बतलाते।
गुरु लघु तम लघु ऊर्ध्व में क्रमशः, धवल कांति फैलाते॥
शत इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की हम महिमा गाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते॥44॥

ॐ ह्रीं छत्र त्रय सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् के 'गम्भीर वचन' शुभ, प्रमुदित होकर पाते।
मोह महातम हरने वाले, सभी समझ में आते॥
शत इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की हम महिमा गाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते॥45॥

ॐ ह्रीं दिव्य ध्वनि सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण के मध्य रत्नमय, 'सिंहासन' मनहारी।
कमलासन पर अधर विराजे, अर्हत जिन त्रिपुरारी॥
शत इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की हम महिमा गाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते॥46॥

ॐ ह्रीं सिंहासन सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

18 दोष रहित जिनेन्द्र देव

जो क्षुधा दोष के धारी, वह जग में रहे दुखारी।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए॥47॥

ॐ ह्रीं क्षुधा रोग विनाशक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो तृषा दोष को पाते, वह अतिशय दुःख उठाते।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए॥48॥

ॐ ह्रीं तृषा दोष विनाशक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो जन्म दोष को पावें, वे मरकर फिर उपजावे।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए॥49॥

ॐ ह्रीं जन्मदोष विनाशक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है जरा दोष भयकारी, दुख देता है जो भारी।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।50।।

ॐ ह्रीं जरा दोष विनाशक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो विस्मय करने वाले, प्राणी हैं दुखी निराले।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।51।।

ॐ ह्रीं विस्मय दोष विनाशक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है अरति दोष जग जाना, दुखकारी इसको माना।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।52।।

ॐ ह्रीं अरति दोष विनाशक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रम करके जग के प्राणी, बहु खेद करें अज्ञानी।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।53।।

ॐ ह्रीं खेद दोष विनाशक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है रोग-दोष दुखदायी, सब कष्ट सहें कई भाई।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।54।।

ॐ ह्रीं रोग दोष विनाशक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब इष्ट वियोग हो जाए, तब शोक हृदय में आए।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।55।।

ॐ ह्रीं शोक दोष विनाशक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मद में आकर के प्राणी, करते हैं पर की हानि।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।56।।

ॐ ह्रीं मद दोष विनाशक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मोह दोष के नाशी, होते हैं शिवपुर वासी।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।57।।

ॐ ह्रीं मोह दोष विनाशक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भय सात कहे दुखकारी, जिनकी महिमा है न्यारी।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।58।।

ॐ ह्रीं भय दोष विनाशक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निद्रा से होय प्रमादी, करते निज की बरबादी।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।59।।

ॐ ह्रीं निद्रा दोष विनाशक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिंता को चिता बताया, उससे ही जीव सताया।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।60।।

ॐ ह्रीं चिंता दोष विनाशक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन से जब स्वेद बहाए, जो भारी दुख पहुँचाए।
जिनवर यह दोष नशाएं, फिर तीर्थंकर पद पाएँ।।61।।

ॐ ह्रीं स्वेद दोष विनाशक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है राग आग सम भाई, जानो इसकी प्रभुताई।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।62।।

ॐ ह्रीं राग दोष विनाशक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिसके मन द्वेष समाए, वह कमठ रूप हो जाए।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।63।।

ॐ ह्रीं द्वेष दोष विनाशक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मरण दोष के नाशी, वे होते शिवपुर वासी।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।64।।

ॐ ह्रीं मृत्यु दोष विनाशक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– शांतिकुन्थुअरनाथ जी, पाए गुण छियालीस।
दोष अठारह से रहित, झुका रहे हम शीश।।65।।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशत गुण अष्टादश दोष विनाशक श्री शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय जाप्य

''ॐ ह्रीं श्री शान्ति कुन्थु अरहनाथ तीर्थंकराय नमः''

समुच्चय जयमाला

दोहा– नगर हस्तिनापुर रहा, अतिशय तीरथ धाम।
श्री जिन की जयमाल गा, करते चरण प्रणाम॥

(शम्भू छन्द)

प्रथम आहार श्री आदिनाथ का, नगर हस्तिनापुर में आन।
नृप श्रेयांश के गृह पर पाया, पञ्चाश्चर्य तब हुए महान॥
शान्तिकुन्थुअरहनाथ जिनेश्वर, पाए यहाँ पर चउ कल्याण।
मल्लिनाथ का समवशरण रच, किए इन्द्र जिनका गुणगान॥1॥

पाण्डू राजा की राजधानी, पाण्डव पांचों हुए महान।
जन्म नगर मुनि गुरूदत्त का, अतिशयकारी क्षेत्र प्रधान॥
राजा पद्म की शरण में आए, बलि आदिक मंत्री थे चार।
बने सहायी राजा के जो, किए बड़ा ही जो उपकार॥2॥

श्री अकम्पाचार्य आदि पर, किए यहाँ उपसर्ग विशेष।
विष्णु कुमार जी किए निवारण, दिए धर्म का जो संदेश॥
महावीर का समवशरण भी, आया यहाँ पे मंगलकार।
नृप शिवराज ने दिव्य ध्वनि सुन, जैन धर्म कीन्हा स्वीकार॥3॥

जिन मंदिर श्री शांतिनाथ का, शोभा पाए अति प्राचीन।
भव्य जीव जिन पूजा अर्चा, करने में होते तल्लीन॥
नन्दीश्वर की रचना पावन, समवशरण भी रहा महान।
प्रतिमाए भूगर्भ से पाई, अतिशयकारी आभावान॥4॥

जम्बूद्वीप अरु तीन लोक शुभ, तेरह द्वीप के हो दर्शन।
तीन चौबीसी गिरि कैलाश का, भव्य जीव करते अर्चन॥

है उत्तुंग श्री शान्तिनाथजी, बाहुबली जिनबिम्ब महान।
गुरुकुल में विद्यार्थी रहकर, भी करते जिनका गुणगान॥5॥

पहली नशियाँ शान्तिनाथ की, श्रावक दीप जलाते हैं।
प्रभु के चरणों में अर्चाकर, मन वाञ्छित फल पाते है॥
दूजी नशिया कुन्थुनाथ जी, तीजी में श्री अरह जिनेश।
चौथी नशियाँ मल्लिनाथ की, दर्शन होते जहाँ विशेष॥6॥

हरे भरें हैं वृक्ष जहाँ पर, कलकल बहती नहर प्रधान।
हिरण मोर आदिक सब प्राणी, विचरण करते जहाँ प्रधान॥
वातावरण जहाँ का पावन, वन उपवन लहराते हैं।
उत्सव होते सदा तीर्थ पर, यात्री भारी आते है॥7॥

दोहा– पावन तीरथ राज की, महिमा अगम अपार।
पूजन वन्दन से बढ़े, विशद पुण्य भण्डार॥

ॐ ह्रीं श्री शांति कुन्थु अरहनाथ तीर्थंकरेभ्य समुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– त्रयपद धारी जिन हुए, शातिकुन्थु अरहनाथ।
तीन योग से पूजते, चरण झुका कर माथ॥

(इत्याशीर्वाद पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

प्रशस्ति

लोकालोक के मध्य में, मध्य लोक मनहार।
मध्य लोक के मध्य है, मेरु मंगलकार॥1॥
मेरू की दक्षिण दिशा, में शुभ क्षेत्र महान।
भरत क्षेत्र शुभ नाम है, अगल रही पहचान॥2॥
उत्तर में हिमवन गिरि, दक्षिण लवण समुद्र।
तिय नदियाँ जिसमें महा, अन्य कई हैं क्षुद्र॥3॥
मध्य रहा विजयार्द्ध शुभ, अतिशय अपम्पार।
रहते हैं नर पशु जहाँ, श्रेष्ठ दिये शुभकार॥4॥
कर्म भूमि जो है परम, बना है धनुषाकार।
मंलगमय रचना बनी, जग में अपरम्पार॥5॥
वर्तमान अवसर्पिणी में, चौबीस हुऐ जिनेश।
तीर्थंकर पद में हुए, धार दिगम्बर भेष॥6॥
कामदेव चक्री हुए, तीर्थंकर भी साथ।
शांतिनाथ अरु कुन्थु जिन, और कहे अरहनाथ॥7॥
तीर्थंकर जिनवर कहे, तीनों लोक प्रसिद्ध।
अष्ट कर्म को नाशकर, आप हुए हैं सिद्ध॥8॥
सुख-शांति की चाह में, घूमें सारे जीव।
कर्मोदय से लोक में, पाते दुःख अतीव॥9॥
त्रय जिनवर अर्चना, करे दुखों का नाश।
जीवन मंगलमय बने, होवे आत्म प्रकाश॥10॥
पौष शुक्ल पाँचे तिथि, पच्चिस सौ अड़तीश।
रहा वीर निर्वाण शुभ, तारीख है उनतीस॥11॥
दिल्ली सूरज विहार में, कीन्हा शीत प्रवास।
लेखन करके ग्रंथ का, लिया यहाँ अवकाश॥12॥
लघु धी से जो कुछ लिखा, मानो यही प्रमाण।
सर्व गुणी जद दें 'विशद', हमको करूणा दान॥13॥
खास दास की आस यह, और न कोई अरदास।
संयम मय जीवन रहे, अन्तिम मुक्तिवास॥14॥

प. पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

(स्थापना)

पुण्य उदय से हे! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैं॥
गुरु आराध्य हम आराधक, करते हैं उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल से आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वानन्॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया है॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती है॥

विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैं॥
ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण पुष्पं निर्व. स्वा.।

काल अनादि से हे गुरुवर! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की! क्षुधा मेटने आये हैं॥
ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछताना॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैं॥
ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना था॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतू, गुरु चरणों में आये हैं॥
ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैं॥
ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं॥
ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।**
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमाल॥

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कण॥
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी॥
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े॥
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़े॥
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षाया॥
पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा।
तेरह फरवरी बंसत पंचमी, बने गुरु आचार्य अहा॥
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरते॥
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती है॥
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना है॥
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ती में रम जाना॥
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साता॥
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करें॥
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करें॥
ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– **गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।**
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखान॥
(इत्याशीर्वाद: पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

प. पू. आचार्य गुरुवर श्री विशदसागरजी का चालीसा

दोहा– क्षमा हृदय है आपका, विशद सिन्धु महाराज।
दर्शन कर गुरुदेव के, बिगड़े बनते काज॥
चालीसा लिखते यहाँ, लेकर गुरु का नाम।
चरण कमल में आपके, बारम्बार प्रणाम॥

(चौपाई)

जय श्री 'विशद सिन्धु' गुणधारी, दीनदयाल बाल ब्रह्मचारी।
भेष दिगम्बर अनुपम धारे, जन-जन को तुम लगते प्यारे॥
नाथूराम के राजदुलारे, इंदर माँ की आँखों के तारे।
नगर कुपी में जन्म लिया है, पावन नाम रमेश दिया है॥
कितना सुन्दर रूप तुम्हारा, जिसने भी इक बार निहारा।
बरवश वह फिर से आता है, दर्शन करके सुख पाता है॥
मन्द मधुर मुस्कान तुम्हारी, हरे भक्त की पीड़ा सारी।
वाणी में है जादू इतना, अमृत में आनन्द न उतना॥
मर्म धर्म का तुमने पाया, पूर्व पुण्य का उदय ये आया।
निश्छल नेह भाव शुभ पाया, जन-जन को दे शीतल छाया॥
सत्य अहिंसादि व्रत पाले, सकल चराचर के रखवाले।
जिला छतरपुर शिक्षा पाई, घर-घर दीप जले सुखदाई॥
गिरि सम्मेदशिखर मनहारी, पार्श्वनाथजी अतिशयकारी।
गुरु विमलसागरजी द्वारा, देशव्रतों को तुमने धारा॥
गुरु विरागसागर को पाया, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाया।
है वात्सल्य के गुरु रत्नाकर, क्षमा आदि धर्मों के सागर॥
अन्तर में शुभ उठी तरंगे, सद् संयम की बढ़ी उमंगें।
सन् तिरान्वे श्रेयांसगिरि आये, दीक्षा के फिर भाव बनाए॥
दीक्षा का गुरु आग्रह कीन्हें, श्रीफल चरणों में रख दीन्हें।
अवसर श्रेयांसगिरि में आया, ऐलक का पद तुमने पाया॥
अगहन शुक्ल पञ्चमी जानो, पचास बीससौ सम्वत् मानो।

सन् उन्नीस सौ छियानवे जानो, आठ फरवरी को पहिचानो॥
विरागसागर गुरु अंतरज्ञानी, अन्तर्मन की इच्छा जानी।
दीक्षा देकर किया दिगम्बर, द्रोणगिरी का झूमा अम्बर॥
जयकारों से नगर गुँजाया, जब तुमने मुनि का पद पाया।
कीर्ति आपकी जग में भारी, जन-जन के तुम हो हितकारी॥
परपीड़ा को सह न पाते, जन-जन के गुरु कष्ट मिटाते।
बच्चे बूढ़े अरु नर-नारी, गुण गाती है दुनियाँ सारी॥
भक्त जनों को गले लगाते, हिल-मिलकर रहना सिखलाते।
कई विधान तुमने रच डाले, भक्तजनों के किए हवाले॥
मोक्ष मार्ग की राह दिखाते, पूजन भक्ती भी करवाते।
स्वयं सरस्वती हृदय विराजी, पाकर तुम जैसा वैरागी॥
जो भी पास आपके आता, गुरु भक्ती से वो भर जाता।
'भरत सागर' आशीष जो दीन्हें, पद आचार्य प्रतिष्ठा कीन्हें॥
तेरह फरवरी का दिन आया, बसंत पंचमी शुभ दिन पाया।
जहाँ-जहाँ गुरुवर जाते हैं, धरम के मेले लग जाते हैं॥
प्रवचन में झंकार तुम्हारी, वाणी में हुँकार तुम्हारी।
जैन-अजैन सभी आते हैं, सच्ची राहें पा जाते हैं॥
एक बार जो दर्शन करता, मन उसका फिर कभी न भरता।
दर्शन करके भाग्य बदलते, अंतरमन के मैल हैं धुलते॥
लेखन चिंतन की वो शैली, धो दे मन की चादर मैली।
सदा गूँजते जय-जयकारे, निर्बल के बस तुम्ही सहारे॥
भक्ती से हम शीश झुकाते, 'विशद गुरु' तुमरे गुण गाते।
चरणों की रज माथ लगावें, करें 'आरती' महिमा गावें॥

दोहा– 'विशद सिन्धु' आचार्य का, करें सदा हम ध्यान।
माया मोह विनाशकर, हरें पूर्ण अज्ञान॥
सूर्योदय में नित्य जो, पाठ करें चालीस।
सुख-शांति सौभाग्य का, पावे शुभ आशीष॥

– ब्र. आरती दीदी

प.पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज द्वारा रचित पूजन महामंडल विधान साहित्य सूची

1. श्री आदिनाथ महामण्डल विधान
2. श्री अजितनाथ महामण्डल विधान
3. श्री संभवनाथ महामण्डल विधान
4. श्री अभिनन्दननाथ महामण्डल विधान
5. श्री सुमतिनाथ महामण्डल विधान
6. श्री पद्मप्रभ महामण्डल विधान
7. श्री सुपार्श्वनाथ महामण्डल विधान
8. श्री चन्द्रप्रभू महामण्डल विधान
9. श्री पुष्पदंत महामण्डल विधान
10. श्री शीतलनाथ महामण्डल विधान
11. श्री श्रेयांसनाथ महामण्डल विधान
12. श्री वासुपूज्य महामण्डल विधान
13. श्री विमलनाथ महामण्डल विधान
14. श्री अनन्तनाथ महामण्डल विधान
15. श्री धर्मनाथ जी महामण्डल विधान
16. श्री शांतिनाथ महामण्डल विधान
17. श्री कुंथुनाथ महामण्डल विधान
18. श्री अरहनाथ महामण्डल विधान
19. श्री मल्लिनाथ महामण्डल विधान
20. श्री मुनिसुव्रतनाथ महामण्डल विधान
21. श्री नमिनाथ महामण्डल विधान
22. श्री नेमिनाथ महामण्डल विधान
23. श्री पार्श्वनाथ महामण्डल विधान
24. श्री महावीर महामण्डल विधान
25. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
26. श्री णमोकार मंत्र महामण्डल विधान
27. श्री सर्वसिद्धीप्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री श्रुत स्कंध विधान
30. श्री यागमण्डल विधान
31. श्री जिनबिम्ब पंचकल्याणक विधान
32. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
33. श्री कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
34. लघु समवशरण विधान
35. सर्वदोष प्रायश्चित विधान
36. लघु पंचमेरू विधान
37. लघु नंदीश्वर महामण्डल विधान
38. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
39. श्री जिनगुण सम्पतिविधान
40. एकीभाव स्तोत्र विधान
41. श्री ऋषि मण्डल विधान
42. श्री विषापहार स्तोत्र महामण्डल विधान
43. श्री भक्तामर महामण्डल विधान
44. वास्तु महामण्डल विधान
45. लघु नवग्रह शांति महामण्डल विधान
46. सूर्य अरिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभ विधान
47. श्री चौंसठ ऋद्धि महामण्डल विधान
48. श्री कर्मदहन महामण्डल विधान
49. श्री चौबीस तीर्थंकर महामण्डल विधान
50. श्री नवदेवता महामण्डल विधान
51. वृहद ऋषि महामण्डल विधान
52. श्री नवग्रह शांति महामण्डल विधान
53. कर्मजयी श्री पंच बालयति विधान
54. श्री तत्वार्थसूत्र महामण्डल विधान
55. श्री सहस्रनाम महामण्डल विधान
56. वृहद नंदीश्वर महामण्डल विधान
57. महामृत्युंजय महामण्डल विधान
59. श्री दशलक्षण धर्म विधान
60. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
61. श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान
62. अभिनव वृहद कल्पतरू विधान
63. वृहद श्री समवशरण मण्डल विधान
64. श्री चारित्र लब्धि महामण्डल विधान
65. श्री अनन्तव्रत महामण्डल विधान
66. कालसर्पयोग निवारक मण्डल विधान
67. श्री आचार्य परमेष्ठी महामण्डल विधान
68. श्री सम्मेद शिखर कूटपूजन विधान
69. त्रिविधान संग्रह–1
70. त्रि विधान संग्रह
71. पंच विधान संग्रह
72. श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
73. लघु धर्म चक्र विधान
74. अर्हत महिमा विधान
75. सरस्वती विधान
76. विशद महाअर्चना विधान
77. विधान संग्रह (प्रथम)
78. विधान संग्रह (द्वितीय)
79. कल्याण मंदिर विधान (बड़ा गांव)
80. श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान
81. विदेह क्षेत्र महामण्डल विधान
82. अर्हत नाम विधान
83. सम्यक् अराधना विधान
84. श्री सिद्ध परमेष्ठी विधान
85. लघु नवदेवता विधान
86. लघु मृत्युँजय विधान
87. शान्ति प्रदायक शान्तिनाथ विधान
88. मृत्युञ्जय विधान
89. लघु जम्बू द्वीप विधान
90. चारित्र शुद्धिव्रत विधान
91. क्षायिक नवलब्धि विधान
92. लघु स्वयंभू स्तोत्र विधान
93. श्री गोम्मटेश बाहुबली विधान
94. वृहद निर्वाण क्षेत्र विधान
95. एक सौ सत्तर तीर्थंकर विधान
96. तीन लोक विधान
97. कल्पद्रुम विधान
98. श्री चौबीसी निर्वाण क्षेत्र विधान
99. श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर विधान
100. श्री सहस्त्रनाम विधान (लघु)
101. श्री त्रैलोक्य मण्डल विधान (लघु)
102. श्री तत्वार्थ सूत्र विधान (लघु)
103. पुण्यास्त्रव विधान
104. सप्तऋषि विधान
105. तेरहद्वीप विधान
106. श्री शान्ति,कुन्थु, अरहनाथ मण्डल विधान
107. श्रावकव्रत दोष प्रायश्चित विधान
108. तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ विधान
109. सम्यक् दर्शन विधान
110. श्रुतज्ञान व्रत विधान
111. ज्ञान पच्चीसी व्रत विधान
112. तीर्थंकर पंचकल्याणक तिथि विधान
113. विजय श्री विधान
114. चारित्र शुद्धि विधान
115. श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान
116. श्री आदिनाथ विधान (रानीला)
117. श्री शांतिनाथ विधान (सामोद)
118. दिव्यध्वनि विधान
119. षट्खण्डागम विधान
120. श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक विधान
121. विशद पञ्चागम संग्रह
122. जिन गुरु भक्ती संग्रह
123. धर्म की दस लहरें
124. स्तुति स्तोत्र संग्रह
125. विराग वंदन
126. बिन खिले मुरझा गए
127. जिंदगी क्या है
128. धर्म प्रवाह
129. भक्ती के फूल
130. विशद श्रमण चर्या
131. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई
132. इष्टोपदेश चौपाई
133. द्रव्य संग्रह चौपाई
134. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई
135. समाधितन्त्र चौपाई
136. शुभषितरत्नावली
137. संस्कार विज्ञान
138. बाल विज्ञान भाग–3
139. नैतिक शिक्षा भाग–1, 2, 3
140. विशद स्तोत्र संग्रह
141. भगवती आराधना
142. चिंतवन सरोवर भाग–1
143. चिंतवन सरोवर भाग–2
144. जीवन की मन:स्थितियाँ
145. आराध्य अर्चना
146. आराधना के सुमन
147. मूक उपदेश भाग–1
148. मूक उपदेश भाग–2
149. विशद प्रवचन पर्व
150. विशद ज्ञान ज्योति
151. जरा सोचो तो
152. विशद भक्ती पीयूष
153. विजोलिया तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह
154. विराटनगर तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह

नोट : उपरोक्त 120 विधानों में से अधिकाधिक विधान कर अथाह पुण्याभव करें।